क्रान्तिक न्यूनतम प्रयास का सिद्धान्त (Critical Minimum Effort Theory)

11-05-09

क्रान्तिक न्यूनतम प्रयास का सिद्धान्त के प्रतिपादक प्रो० हार्वे लिबेन्सटीन है जिन्हो ने अपने इस सिद्धान्त मे यह विचार प्रस्तुत किया है कि अल्पविकसित देशो मे गरीबी का दुष्चक्र पाया जाता है जो उन्हे निम्न प्रति व्यक्ति संतुलन की स्थिति के आस-पास रखता है। इस दुष्चक्र से निकलने का मार्ग है- एक निश्चित क्रान्तिक न्यूनतम प्रयास जो प्रति व्यक्ति आय को उस स्तर तक बढ़ा दे जिसपर सतत विकास कायम रह सके।

लिबेन्सटीन के अनुसार हर अर्थव्यवस्था झटको (Shocks) तथा प्रोत्साहनो (stimulants) के अधीन होती है। झटके मूलतः प्रति व्यक्ति आय कम करने का प्रभाव देता है जबकि प्रोत्साहन प्रति व्यक्ति आय मे वृद्धि करता है। लिबेन्सटीन के अनुसार कुछ देश इसलिए अल्पविकसित है क्योकि उनमें झटकों का आकार प्रोत्साहनो के आकार से अधिक होता है। इनके अनुसार क्रान्तिक न्यूनतम प्रयास निवेश की वह मात्रा है जो प्रतिव्यक्ति आय कम करने वाले कारको की अपेक्षा प्रतिव्यक्ति आय बढ़ाने वाले कारको को अधिक प्रेरित कर दे।

इस प्रकार लिबेन्सटीन ने अपने क्रान्तिक न्यूनतम प्रयास मे निम्नलिखित दो प्रकार के कारको का विश्लेषण किया है।-

1. आय में वृद्धि करने वाला कारक
2. आय मे कमी करने वाले कारक

आय मे वृद्धि करने वाले कारक

12-05-09

क्रान्तिक न्यूनतम प्रयास सि० के तर्क के आधार पर प्रत्येक अर्थव्यवस्था मे आय प्रेरक शक्तियां मौजूद रहती है इस सिद्धान्त के तर्क का आधार कुछ अनुरूप आर्थिक स्थितियो का पाये जाना है ताकि आय कम करने की तुलना में आय बढ़ाने वाली शक्तियां अधिक ऊँची दर से विस्तार करके विकास प्रक्रिया मे वृद्धि कारको का विस्तार ऐसी अनुकूल परिस्थितियाँ उत्पन्न करता है। लीबेन्सटीन के अनुसार किसी अर्थव्यवस्था मे चार निर्दिष्ट कारक है -

1. उद्यमी
2. निवेशक
3. बचतकर्ता
4. नवप्रवर्तक

वृद्धि कारको की सहायक क्रियाओ की परिणामस्वरूप उद्यमशील का निर्माण, ज्ञान की मात्रा मे वृद्धि, लोगो की उत्पादक कुशलताओ का विस्तार तथा बचतो एवं निवेश की दर में वृद्धि होती है।

लीबेन्सटीन के अनुसार आय में वृद्धि करने वाले कारक प्रोत्साहनो पर निर्भर करते है। प्रोत्साहन निम्नलिखित दो प्रकार के होते है।

क. शून्य राशि प्रोत्साहन (Zero Sum Incentives)

ख. धनात्मक राशि प्रोत्साहन (Positive Sum Incentives)

शून्य राशि प्रोत्साहन :- शून्य राशि प्रोत्साहन वे होते है जो राष्ट्रीय आय मे वृद्धि नही करते है सिर्फ एक वर्ग से दूसरे वर्ग को आय का पुनर्वितरण करते है और इसप्रकार सामान्यतः आय असमानता मे वृद्धि करते है।

धनात्मक राशि प्रोत्साहन :- धनात्मक राशि प्रोत्साहन वे होते है जो राष्ट्रीय आय मे वृद्धि करते है। स्पष्ट है धनात्मक राशि प्रोत्साहन ही विकास मे सहायक होते है किन्तु अल्पविकसित देशो मे परिस्थितियां कुछ ऐसी होती है कि उद्यमी शून्य राशि क्रियाओ अथवा राष्ट्रीय आय को कम करने की क्रियाओ मे ही लगा रहता है।

2. आय को कम करने वाले कारक :- लीबेन्सटीन के अनुसार अल्पविकसित अर्थव्यवस्थाओ मे आय को कम करने वाले कारक विकास के परम्परागत व्यवस्था मे अधिक सक्रिय होते है। आय को कम करने वाले कारको मे मुख्य कारक निम्न है।

A. व्यापक स्तर पर एकाधिकारात्मक व्यापार क्रियाए जिनके कारण कुल संसाधनो मे वृद्धि नही हो पाती अथवा उपलब्ध संसाधनो का अनुकूलतम आंवटन नही हो पाता है।

B. राजनैतिक शक्ति एवं सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए गैर व्यापारिक क्रियाए।

C. आवश्यक रूप से अनुत्पादक सार्वजनिक या नीजी प्रदर्शन उपभोग व्ययो मे रूढियां जो उन संसाधनो का प्रयोग करते है जिनका अन्यथा प्रयोग उत्पादक क्रियाओ मे करते हुए पूंजी संचय के लिए किया जा सकता है।

D. जनसंख्या वृद्धि की तीव्र दर जो अन्य कारको के स्थिर रहते हुए प्रति व्यक्ति उपलब्ध पूंजी की मात्रा को कम कर देती है।

पूंजी उत्पाद अनुपात

अर्थव्यवस्था को पिछड़ेपन की स्थिति मे रखने वाले कारको पर काबू पाने के लिए एक क्रान्तिक न्यूनतम प्रयास आवश्यक होता है ताकि आर्थिक विकास की तीव्र